गोवा का लोकसाहित्य

डॉ.चन्द्रलेखा

मानव संस्कृति न जाने किस काल से इस पूरे ब्रह्माण्ड में पनप रही है। यह पूरा ब्रह्मांड मनुष्य के सभ्य होने का इतिहास है। सामान्य मनुष्य के पास अपनी दृष्टि अनुसार ही संसार होता है, जो सीमित है। अलग-अलग देशों के भूगोल में रचता गया है। अपने अपने देशों की भूगोलों की रचने बसने की सजने संवरने की, पाने खोने की, विकास विध्वंस की, खोज प्रगति की प्रकृति पर्यावरण की, शुद्ध संकर की परिवर्तनशील पहचान होती है। कोई भी संस्कृति सचेत और अचेत संपर्क के कारण विकास करती है। लोक मानस का रेखांकन करना उसका लक्ष्य होता है। यह लोकमानस अपने समय की संस्कृति का दर्पण होता है। जो इतिहास, इतिहास, भूगोल से संबंधित होते हुए भी मानवीय लोक मानस संदर्भ में अबाधित होता है, उसका सच अपने साथ-साथ औरों की सार्थक सच्चाई में पनपता है। अपने इतिहास को जीवन में संजोकर उसके गर्भ से आने वाले समय इतिहास को, अपने भूगोल में समेटकर, उस संकर को जन्म देकर, उसे विकसित करने की कला लोकमानस को आती है। इतना ही नहीं वह संकर की संस्कृति श्रृंखलाबद्ध तरीके से लोक जीवन का हिस्सा भी बन जाती है।

आज जिस भौगोलिक दृष्टि से गोवा को पहचाना जाता है उसे पहले 'गोमन्तक' या 'गोमान्तक' नाम से जाना जाता था। जिसका उल्लेख महाभारत के, भीष्मपर्व के नवम अध्याय में 'गोमन्तक', इस देशवाचक और लोकवाचक शब्द के रुप में किया गया है। स्कंद पुराण में जो सहयाद्री खंड है उस में 'कोंकणाख्यान' मिलता है।[1] इसके रचयिता कौन है, इसके बारे में विद्वान एकमत नहीं है। गोवा का उल्लेख है। कोंकण प्रांत के नाम से मौर्यों की सत्ता में हुआ है। राजा अशोक के समय के स्तूप इ.स. 1882 में सर जेम्स कॅंपवेल और पंडित भगवानलाल ने उत्खनन में खोज निकाले हैं। बौद्ध धर्म के, हीनयान पंथ के सादे विहार भी यहां पाये गये हैं। सन् 1930 में कोलवाल गांव में महायान धर्म पंथ का चिन्ह दिखाती हुई बुद्ध की मूर्ति फादर हेरस को प्राप्त हुई है। सातवाहन कदंब, चालुक्य, राष्ट्रकूट, शिलाहार, आदिलशाही सत्ता और अंत में सन् 1510 में, सत्रह फरवरी को, गोवा में, पुर्तगाली सत्ता क़ायम हुई। सन् 1961 उन्नीस दिसंबर को गोवा इस शासन से मुक्त हुआ और स्वतंत्र भारत का अविभाज्य अंग बन गया। 451 साल के शासन काल में गोवा के लोक मानस पर जो राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा उसका चित्रण लोकगीतों में देखा जा सकता है। संस्कृतिकरण और संकर का सब से बड़ा उदाहरण 'मांडो' और 'देखणी' नृत्य परंपरा का है। हालांकि 'देखणी' नृत्य को लेखक विनायक विष्णू खेडेकर परंपरागत नृत्य के अंतर्गत नहीं रखते।[2] यहां का 'तियात्र' भी लोकनाट्य प्रकार का है। यहां जागर, धालो, शिगमो (होली उत्सव) कार्नवाल (रंगों का त्योहार) मूसल (मुसल) नृत्य, रणमाले, गोलणकाला, धनगर नृत्य, तोण्यामेल, गोंफ घोडेमोडणी, वीरभद्र के साथ साथ सांगोड या सांगड, संज्यांव या सांज्यांव भी है। विवाह गीतों में देखा जाय तो हिन्दू और क्रिश्चियन समाज में संस्कृतिकरण दृष्टव्य होता है वह अपने आप में एक अलग निशानी है।

पुर्तगाली लोग जब गोवा में आये तब उन्होंने अपना राजकीय शासन करते हुए मिशनरी कार्य भी शुरु किया और धर्मांतरण की प्रक्रिया से जो क्रिश्चियन बने उन्हें पुराण शैली में बाईबिल की कथा, 'क्रिस्तपुराण' के रुप में फ़ादर थॉमस स्टीफन्स ने दी।

''कथा-पुराण पढ़ने की और सुनने की आदत जिसे हो, जिसने उस आनंद का लाभ लिया हो ऐसे उच्च वर्गीय हिंदू लोगों को धर्मांतरण के बाद पूर्वाश्रम के ग्रंथों को पढ़ने की आज्ञा नहीं थी। उनकी धर्मपिपासक वृत्ति को 'धर्मतत्वसार' जैसी पुस्तकें असमाधानकारक लगती थी। ख्रिस्ती धर्म का श्रेष्ठ वाङ्मय लेटीन और पोर्तुगीज भाषा में था। नवख्रिस्ती को वे भाषाएं आती नहीं थीं। रामायण और महाभारत तथा भागवत आदि ग्रंथों के रसपान के आगे 'धर्मतत्वसार' ग्रंथ रुक्ष लग रहे थे। यह बात चाणाक्ष स्टीफन ने भांप ली थी-

- हा मोठा अभिप्रावो जी म्हणे। तुमी तरी वारिली
मागिली पुराणे।
तरी प्रति पुस्तकें आमां कारणे। कैसी न करिती तुमी॥
या पासोनिया जी आत्ता। जैतियां चेआ पुराणकथा।
नव क्रिस्तांवांचेआ चित्ता। आठवती देखा॥ (3)
- ओं नमो विश्वभरिता। देवा बापा सर्व समर्था।

परमेश्वरा सत्यवंता। स्वर्ग पृथ्वीचा रचणारा॥

*- जें नंयाथें सत्य मानिती। ते प्राणिये **वैकुंठी** निधती।*

*आणी जे सत्य न मानिती। ते पडती **यमपुरी**॥ ॥6*

अंत में -

ऐसे कथेची वित्पति। आइका जें सांगित लें अल्पमती।

*तें **क्रिस्तदासु** करी विनंती। क्षमा किजे अज्ञानाथें॥23*

रेखांकित शब्दों को देखने से ही समझ में आ जाएगा कि संस्कृतिकरण में एसिमिलेशन कैसे होता है। फादर 'ओं नमो' कहते हैं और 'क्रिस्तदासु' भी कहते हैं। पुराणों की धारणा को क्रिस्त की कहानी में बुनते हैं। गोवा में यहीं से 'चर्च' जिसे पुर्तगाली भाषा में 'इगोर्जे' कहते हैं, वही शब्द कोंकणी में 'इगर्ज' रुप में भी चलता है। इगर्ज की स्थापना के बाद इसी क्रम में साहित्यिक रचनाओं के रुप में 'देवाची एकाग्र बोलणी' 'वनवालाच्यो मलो' रचे गए। उस समय क्रिस्त धर्म की भाषा लैटिन थी इसलिए इगर्ज के आसपास लैटिन संस्कृति तैयार हुई। आज भी गोवा को Rome of the east कहा जाता है। उस समय रविवार को इगर्ज में क्रिस्तपुराण के साथ धार्मिक गीत भी सिखाए जाते थे, जो लैटिन भाषा में होते थे जिसमें इटालियन संगीत का आधार लिया जाता था। इगर्ज में वायोलिन सिखाने 'मेस्प्री' होता था। उस समय 'ओवी' श्लोको में हमारे यहां गीत रचे जाते थे। जिसको मिलाकर यहां गीतों की रचना हुई जो धार्मिक गीत कहलाये। इगज़ 'मेस्त्री' ने ही 'मांडो' की रचना की। 'मांड' की पूजा तो होती ही थी जो कि हमारे समाज की थाती थी पर अब 'मांडो' 'धूलपद' भी अपने बनते गए। कहा जाता है क्रिश्चियन परिवारों में शादी के समय 'मांडो' गाए जाते थे, जिसकी ताल पर नृत्य भी होता था। उन रचनाओं में पुर्तगाली शब्द आसानी से पहुँच जाते थे। जिन वाद्यों का प्रयोग होता था उनमें भारतीय वाद्य 'घुमट' का भी स्थान होता था। आज भी 'मांडो' में उसका स्थान अबाधित रुप से चल रहा है। मांडो में ज़्यादातर प्रेमगीत की रचना होती है। उसकी गायन गति थोड़ी धीमी होती है[5] उसके बाद 'धूलपद' गाया जाता है। जिसकी गति द्रुत होती है। गोवा के समाज का प्रतिबिंब उसमें झलकता है। भारत देश में अलग अलग प्रांतों में शादी के समय गारी-गाली-गीत गाए जाते है। बिल्कुल उससे मिलता जुलता रुप इस धूलपद की भाषा का होता है। मांडो नृत्य में हिस्सा लेने वाले स्त्री पुरुष जो वेश धारण करते हैं वही बहुत कुछ सूचित कर जाता है। पुरुष पुर्तगाली राजघराने के समान वेश धारण करते हैं अर्थात लंबी काली पेंट, लंबे नुकीले कोट, सफेद कॉलर और स्त्रियां जो पहनती हैं उनमें गोवावासी का पहनावा नहीं होता, न ही पुर्तगाली स्त्रियों का होता है। वे तो मलेशियन स्त्रियों के वेश की तरह वेश धारण करके आती हैं। इसके पीछे भी पुर्तगाली प्रजा के साम्राज्यवाद के संस्कृतिकरण का समन्वय लोकमानस में प्रतिबिंबित होता है। इतिहास गवाह है कि मलाका स्त्रियों की शादी राजघरानों में हुई थी या करवाई गई थी। वे जब गोवा में आईं तो अपना मलेशियन पहनावा लेकर आईं थीं। वही पहनावा आज तक गोवा के मांडो में होता है। पर अब स्त्रियां उसमें साड़ी बांधने लगी हैं और पुरुष कोट, पेंट, टाई में होते हैं। लोकमानस में अपना इतिहास और समाज रचना, विकास दर्शाने का एक तरीक़ा होता है जो अपने ही भूगोल में रचा गया होता है। जिसका वरण् सहजता से संगीत, नृत्य, वाद्य, पहनावा, भाषा, संक्रमण, संस्कृति के रुप में होता है, जो जीवन में, कृति में व्यक्त होता है शायद वही संस्कृति भी है। गोवा का मांडो जो लोकमानस द्वारा बयां होता है वह सहज वर्णसंकरता का ही रुप है। वरना मलाका औरतें मलेशियन पहनावा और गोवा में उन चीज़ों का प्रतीकात्मक निरुपण पुर्तगाली पहनावे में कैसे हो सकता हैं? आज भी गोवा में मांडो के उत्सव होते हैं पर साल में एक ही बार। आज के नगर समाज में अगर इसे संजोया नहीं जाता तो आनेवाले कल में मांडो का भविष्य क्या होगा यह बताना मुश्किल है। पुर्तगाली शासन में जो साम्राज्यवाद की सत्ता कर रही थी जिसकी वजह से औरतें उन्हें शाप दे रही थी -

कोंकणी

- त्या दिसाचो उगडास केल्यारी
संवसार नाका दिसता
तांच्यो बायलो आवय रे लोयाल
शिराप घालता तुका -

हिंदी

उस दिन की याद करने से ही
पूरा संसार निःस्सार लग रहा है
*उनकी औरतें, माँ रे **लोयाल** (स्त्री का नाम)*
श्राप दे रही है
*एक **धूलपद** का उदाहरण देखें -*

कोंकणी

सांत आंतोनिच्या दोंगरार
पाकले आपोयताय
येत्यावेत्या बायलांक
दोले मोडिताय
माथ्याक फुलां मावल्यार
हातु हालोयताय
तांबडो कांपोड न्हेसल्यार
रुप्या दाखोयताय

हिंदी-

संत आंतोनि के पर्वत पर

पाखले (पाकले) बुला रहे हैं
आने जाने वाली औरतों को
आँख मारते हैं
माथे में अगर फूल पहने तो
हाथ हिलाकर बुलाते हैं
लाल कापड पहने तो
रुपिया दिखाते हैं।

★ *पाखले-गोरे-सफेद चमडीवाले।*
क्रिश्चियन समाज में भी **धालो** *का रुप देखें -*

कोंकणी

पियेच्या मूळांत गे,
हो धूप कोणे वारयला गे,
हो धूप कोणे वारयला

पियेदाद सायबीण येयल्या गे,
तिणे हो बिजमेंत केला गे,
हो बिजमेंत केला

पवित्र (सायबीण मांय) माता मरियम ने धूप पसराया है। पियेदाद अर्थात पवित्र माँ आई हैं और उसी ने चमत्कार किया है।[6]

क्रिश्चियन समाज में विवाह-गीत के रंगों में चूड़ियों का महत्व है। दुल्हन जो अनेक रंगों की-ज़्यादातर लाल हरी केसरी-उसे 'चूडों' कहते है। भारतीय विवाह गीतों में जैसे माँ की आराधना, सुहाग का चूडा होता है उस पर आशीर्वाद लिया जाता है वैसे ही क्रिश्चियन समाज में दुल्हन 'चूडो' पहनती है और माता मरियम तथा ईसा मसीह से आशीर्वाद मांगती है। शादी एक पवित्र साक्रामेंत - पवित्र संस्कार है। देवा-बापा पुत्र के नाम से नमन किया जाता है और स्वर्ग के भाग्यवान संत, देव उसे आशीर्वाद देते हैं।

- *दुसरी आमच्या बापा, तिसरी नमान मेरी*
  आमच्या चुड्याक बेंसाव दीतू, सर्गीच्या आंकवार मोरी
- *चौथी शरणायतां, पांचवी सतेमानतां*
  आमच्या चुड्याक बेंसाव दितात सर्गींची भागेवंता....
- *आयकु आयकु न्हवत्या व्होकल सांगता काणी*
  आपुण म्हुणा राणी, तुजे राजवटकेची
  शेतात वेत्या मानया, खांधार तुज्या खोरे
  तुजे देवान करचे बोरे, नवत्या बाबा आमच्या[7]

अर्थात- दूसरे हमारे पिता और तीसरी मरियम माता हमारे चूडे को स्वर्ग से आशीर्वाद दे रही हैं। स्वर्ग के भाग्यवंत आशीर्वाद दे रहे हैं। सुनो दूल्हे राजा, दुल्हन कहानी सुना रही है और कह रही है कि तुम्हारे राज्य शासन में वह तुम्हारी राणी है। खेत में काम करने जाने वाले किसान, तुम्हारे कंधे पर फावड़ा है। भगवान तुम्हारा भला करे हमारे दूल्हे राजा....

देखणी लोकनृत्य का इतिहास भी कहता है कि पाश्चात्य संगीत के ताल पर भारतीय पद्धति का यह नृत्य होता है।[8] देखणी शब्द का अर्थ है सुंदर दिखने वाली । कहा जाता है कि भगवान की पालकी के सामने देवदासी समाज की औरतें नृत्य करती थीं, उसमें ही देखणी नृत्य का जन्म हुआ है। थोड़ें विद्वानों का मानना है कि पुर्तगाली लोगों के आगमन के बाद उन्हें ख़ुश करने के लिए जो नृत्य किया जाता था उसमें भारतीय पद्धति के साथ पाश्चात्य संगीत का मेल साधकर देखणी नृत्य प्रारंभ हुआ। इस नृत्य में गिटार, वायोलिन वाद्यों का उपयोग किया जाता है। हिन्दू क्रिश्चियन दोनों समाज की स्त्रियाँ यह नृत्य करती है। नौ गज की साड़ी पहनकर बालों का जूड़ा बनाकर जूड़े में फूल लगाकर पारंपारिक गहने भी पहनती हैं। महत्वपूर्ण बात यह कि नाक में नथ और पैरो में पाज़ेब अवश्य होती है। बॉबी फ़िल्म में स्वर्गीय राजकपूर ने इस नृत्य का उपयोग बहुत सुंदर ढंग से किया है। ''ना मांगू'' सोना चांदी, ना मांगू हीरा - मोती, ये मेरे किस काम के..... ''

कोंकणी–

हांव सायबा पलतडी वयता/दामुल्या लग्नाक वेता
म्हाका सायबा वाट दाखय/म्हाका सायबा वाट कोलोना.
नाकाची नोथु दिता, पांयाची पोंयजणां दितां
म्हाका सायबा वाटु दाकय/ म्हाका सायबा वाटुकोलोना.

हिन्दी–

मैं सायबा जा रही उस पार
जा रही शादी में दामु की
मुझे सायबा रास्ता दिखाओ
मुझे सायबा रास्ता नहीं मालूम
देती हूँ नाक की नथ
देती हूं पैरों की पाज़ेब
मुझे सायबा रास्ता दिखाओ....

फुगड़ी – इस नृत्य में सिर्फ स्त्रियां ही होती हैं। नववारी (नवगज) साड़ी कछोटा बांधकर पहनी जाती है। घालो और गणेश चतुर्थी के समय यह नृत्य किया जाता है। महाराष्ट्र और गोवा में अनेक प्रकार की फुगडी होती है। कर्णाटक में गोवा के लोगों की तरह ही फुगडी नृत्य होता है। यहां रहने वाले कोंकणी भाषा को कन्नड लिपि में लिखते हैं। वैसे गोवा में भी कोंकणी नागरी और रोमी दोनों लिपि में लिखे जाती है। कोचि में भी कोंकणी भाषी लोग हैं जो कि मलयालम् लिपि में कोंकणी लिखते हें। यहां पर कोचि में जो फुगडी नृत्य होता है उसके उदाहरण दे रही हूँ। कुणबी लोग जो केराला में रहते हैं वे खेतों में काम करते समय, होली उत्सव में नवदंपति अपनी अलग भावना, भविष्य के सपने संजोते हुए पेड़ की पूजा करते हैं और बेटे के

जन्म उत्सव के लिए तेल लाने को कहा जाता है-

हिन्दी भावार्थ –नारियेल के पेड़ पर चढ़ने वाले पाडेकार यहां दौड़ो वहां दौड़ो, घर में भाभी को बेटा हुआ है

अब तुम दौड़कर जाओ और तेल ले आओ[9] इस नृत्य में जो भाषा है वह पुरानी कोंकणी है जो कि सोलहवीं शताब्दी की है। इस नृत्य में ढोलक के ताल पर हाथ में दांडिया लेकर गीत गाया जाता है। इसकी लय और ताल थोड़े द्रुत गति के होते हैं। फागुन के मास में Zigmo नृत्य होता है। इसमें व्यंग्य के गीत भी हो सकते हैं। सिर्फ युवा लड़कियां इसमें हिस्सा लेती हैं- (यहां पर उदाहरण रोमी लिपि में है)

Zigmache Vellari,
Pongeeru phulella,
Eka sayeechee chedya
khelak ayelee[10]

अर्थ - झिगमा के समय 'पोंगीरा के फूल' के जैसे ही सुंदरता लिए एक लड़की खेलने आई है।

" Mugaya Baleigo
Thu kale kithyak
Zigmo kheluk Ayilena ?"

अर्थ – मोगुया (लड़की का नाम) बाय तू कल झिगमो खेलने क्यों नहीं आई ?

यहाँ पर बच्चों के लिए एक गीत पुर्तगाली युद्ध का है, जिसकी शुरुआत यूं होती है -

Phirngyali Tharuva Ailee Sola Sathera
Pangyache Pettu Polo,
Ghayu Zalorai,
Ghayu Zalorai

अर्थ - पुर्तगाली लोगों को लेकर पंद्रह-सोलह पानी के जहाज आए हैं। चप्पू चलाने के कारण- नाविकों के कारण- घाव हुए हैं, घाव हुए हैं। उसी तरह एक तीखा व्यंग्य जो संकर संस्कृति का प्रश्नार्थ चिन्ह है। जिसमें संकर का आगमन, चप्पू का आघात अर्थात नाविकों से संबंध, बीज वपन और उसका सहज स्वीकार भी लोकमानस में हैं। फिर भी सामाजिक, नैतिक और सामासीकरण की संस्कृति का द्योतक भी है।

Avoi Bapui Callo, Cheddua,
Coxi tuji gori cate"11
नागरीलिपि - आवय बापूय काले
चेडूवा कशी तुजी गोरी (गॉरी) कात?
हिंदी अर्थ - माँ-बाप काले हैं तो फिर बेटी की
चमड़ी इतनी गोरी कैसे है?

मूसल नृत्यः (मूसल नृत्य) गोवा के चांदर गांव में (पुराना चंद्रपुर) मूसल नृत्य होता है। उसमें उस गांव के इतिहास के धागे पाए जाते हैं। देखें -

गोंयांत आयलो सांकपारी,
आनी कात काडली आमची तुरुशांनी !
गोंयांत सान कामदेव येता देख तमाशा।
आरे गोंयांत सान कामदेव येता देख तमाशा !
गोंयांत सान फ़िरंगी येता देख तमाशा,
आरे गोंयांत सान फ़िरंगी येता देख तमाशा !
फ़िरंग्याच्या माथ्यार चेपें आसा रे,
फ़िरंग्याच्या माथ्यार चेपें आसा ?

हिंदी भावार्थ गोवा में सांकपारी लोग आये, अब तुर्कस्तानी ने आकर हमें सताया, कामदेव राजा का राज्य आया देख तमाशा, फिरंगी आए, फिरंगी के माथे पर टोपी है, टोपी.....

अंग्रेजी में हाल ही में एक पुस्तक आई है "The Mussol Dance of Chandor : The Dance of The christian kshtriyas." लेखक हैं Zenaidas Morenas जिसमें चांदर गांव का इतिहास ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी का बताया गया हे। मूसल- मूसल - को भारतीय पोर्तुगेझ संस्कृति के समन्वय का उदाहरण माना गया है। इस मूसल नृत्य में तुर्क बहामनी विजयनगरीय फिरंगी सब का उल्लेख हुआ है। इस नृत्य की महत्वपूर्ण बात यह है कि उनका पहनावा, संगीत, वाद्य और नृत्य की कोरियोग्राफ़ी इन सब का स्त्रोत हिंदू पुराण हैं। यहाँ रसपूर्ण बात यह भी है कि वर्ग और जाति का दूषित रुप संस्कृतिकरण की समन्वय प्रक्रिया का दृष्टव्य होता है। यहां के क्रिश्चियन लोगों में जातिप्रथा भी है।

इस मूसल नृत्य के पीछे जो आख्यायिका है वह भी महत्वपूर्ण है। ''चांदर गांव पर (प्राचीन चंद्रपुर) राज्य करने वाले विजयनगर साम्राज्य में बुक्कराय प्रथम इनके पुत्र'' हरिहर राय प्रथम'' राजा ने चंद्रपुर गांव पर आक्रमण किया और चोल राजा को बुरुज के मुख्य द्वार पर ही रोककर उसे पराभूत किया। उस जीत की ख़ुशी मनाने मूसल नृत्य का आयोजन हुआ था। उस समय बंदीवान चोल राजा को घूमाया गया था। उस प्रसंग की याद में आज भी चांदर गांव में मूसल नृत्य किया जाता है। चोल राजा के प्रतीक के रुप में भालू का मुखौटा पहनकर नृत्य किया जाता है। कहने की ज़रुरत नहीं कि कल के चंद्रपुर का इतिहास इसी आख्यायिका में आबद्ध है। लोकसाहित्य एक बहुत बड़ा भांड है, उसमें अगर झांकेंगे तो बहुत सारी बातें समझने में आसानी होगी।

सांगड या सांगोड – शब्दकोश में इस शब्द का अर्थ ही है जोड़ी। नावो की जोड़ी। होड़ी की जोड़ी देवस्थान के तालाब में नावो की जोड़ी पर सेतु बनाकर उस में भगवान की मूर्ति को बिठाकर देव उत्सव की झांकी निकालना। दूसरा अर्थ है क्रिया के रुप में 'सांगड घालप' - अर्थात जोड़ी बनाना।[13] शाब्दिक अर्थ से ही स्पष्ट होता है कि हमारे देश में मंदिरों के आसपास इस प्रकार की झांकी निकाली जाती थी। शायद

इसीलिए देवस्थानों के पास तालाब भी होते हैं। जिससे नौकाविहार की झांकी आसानी से निकाली जा सके। जब पुर्तगाली शासन में धर्मांतरण हुआ तब उन्होंने भी अठारहवीं शताब्दी में बोटों पर 'सांगड' या सांगोड की शुरुआत की। संत पिटर की याद में आज भी कांदोलिम के ओर्डो गांव में जून की 29 को सांगोड आज भी मनाया जाता है। इसमें बांस के सहारे इगर्ज का चर्च का - आकार बनाया जाता है जिसे कपड़े से बांधकर उस पर फूलों से सिंगार किया जाता है। दोनों नांवों को लकड़े के मंच से जोड़ा जाता है, जिस पर कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। 'कांतार' गीत गाते हैं। आज की नावें फ़ाईबर की होती हैं और बांस की जगह लकड़ी से चर्च का आकार उभारा जाता है। पवित्र क्रोस के पास शराब रखी जाती है, भगवान का शुक्रिया अदा करने के बाद आने वाले साल के लिए प्रार्थना की जाती है।

जैसे हमारे देश में बरसात को बुलाने मेंढकों की शादी धूमधाम से रचाई जाती है वैसे ही गोवा के 'ओरेसांव' गांव में संत आंतोन की मूर्ति टोकरी में बिठाकर उसे स्त्री के सिर पर रखा जाता है और उसे पूरे गांव में घूमाया जाता है।

कोंकणी – सांत आंतोन/पावस घाल / दोंगरा वयले
कालंगिणी पावस घाल गे सायबिणी.....

हिंदी – संत आंतोन/ बरसात भेजो / बरसात
भेजो, पर्वत पर की मेरी देवी।
बरसात भेजो सायबिणी।[14]

इसके बाद में सब लोग इगर्ज में -चर्च- जाकर प्रार्थना करने के बाद विसर्जित होते हैं।

संज्यांव या सांज्यांव :– ज्युवांव संत की याद में 24 जुलाई को आने वाला त्यौहार है। घुमट कासालें। ढोलक बजाते हुए युवा वर्ग की टोलियां आती है। कूंए में या बहते पानी में छलांग लगाते हैं। कांतार गाते हैं। क्रिश्चियन समाज में यह उत्सव मनाया जाता है।

कोंकणी – ओ रे शेज्यांव (कहीं कहीं पर 'शेज्यांव' उच्चारण भी हो गया है) घुंवता तसो घुंवता शेज्यांव/बांयत उडी मारता/शेज्यांव पातोली मांगोता/शेज्यांव पोगोस मागोता/ कांय ना, तोरी/ खोसयेन दिता ते मागोता/ ओ रे शेज्यांव.

हिंदी - ओरे शेज्यांव ---------
शेज्यांव घूमता वैसे घूमता है,
कुए में कूद रहा है,

★

शेज्यांव पातोलयो मांग रहा है,
शेज्यांव पोणोस मांग रहा है,
कुछ नहीं तो
खुशी से जो दे दो वही मांगता है।
ओरे शेज्यांव

★ **पातोल्यो**– हल्दी के पत्तों में नारियल, शक्कर या गुड़ डालकर कभी उबली हुई चनादाल भी मिक्स करते हैं। इसे शेंका या उबाला जाता है। खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है।

★ *पोणोस - पणस, पनस वा कटहल।*

इस त्यौहार में सास अपने जंवाई को घर बुलाती है, उसका मान सम्मान किया जाता है। उसे भी पानी में कूदने पर मजबूर किया जाता है। अगर जंवाई को तैरना नहीं आता तो भी उसे पानी में डूबोकर तुरंत बाहर निकाला जाता है। अपने इलाके में अगर किसी के यहां नया बच्चा जन्मा हो तो उसके नाम से भी ज्युवांव संत की याद में सांज्यांव किया जाता है। मज़ाकिया तौर के कांतार - गीत - भी होते हैं जैसे-

- *आमीं येयल्याय वोर्सांनी*
दुडू घालाय फोर्सानी-
(हम साल में एक बार आते हैं हमें जमकर रुपया दे दो)
- *आर्तुगाला पोर्तुगाला दर्या गाजोता*
दवल्लेचे चेडे आमीं सांज्यांव घालोता[15]

पोर्तुगाल में ओर्तुगाल में दर्यागर्जन करता है, दवल्ले गांव के लड़के हम सांज्यांव कर रहे हैं।

हालांकि आज इसका स्वरुप विकृत हो गया है, पर वास्तव में वह आनंद का त्यौहार है।

ज़ागर या ज़ागोर का अर्थ ही है रात भर जागना और वह भी हंसते, गाते नाचते हुए रात बिताना। ज़ागर के तीन चरण होते हैं। एक नमन। दो, देवों की माया और उनके मुखौटों के संग या उनके अवतार संबंधी कथा, तीन, इस भाग में आख्यान किया जाता है।

चिंबल गांव के गावडे (एक जाति का नाम) ज़ागर में नमन करते हैं उसमें हिंदू धर्म में प्रवेश करने के पहले जो गाया जाता है वह इस प्रकार है -

''बापपुत इस्पिरि संता, तिगया नमन माझे देवा बाप्पा,
सभा की बसुया देवबस घालुयां, आदि नमस्कार
देवासि घालुया''[16]

अर्थात – बाप पुत्र, संतों की आत्मा तीनों को नमन मेरे देवबाप्पा सभा में बैठे, पहले देवों को नमस्कार करें।

इसी तरह शिवोली ज़ागर में हिस्सा लेने वाले साईद, फिरंगी, राजा म्हार और उसका बेटा..... ऐसे पात्र हिंदू-ख्रिस्ती धर्म के गांवकार एक होकर करते हैं वहां भी नमन किया जाता है-

-''पयले नमन देवबाप्पा, दुसरे नमन देवासुता
तिसरे नमन अिस्पिरी संता, सर्वहि देवएकचि रे''[17]

अर्थात– पहला नमन देवबाप्पा को, दूसरा देवपुत्र को तीसरा

नमन संतों की आत्मा को सब धर्म एक ही है।

गोवा में कार्निवाल और शिगमो दोनों त्यौहार मनाये जाते हैं। ईस्टर के दिन प्रभु ईशु पुनर्जीवित होते हैं जिसे 'पास्कां' भी कहा जाता है। पुर्तगाली भाषा का शब्द 'Pascoa' से ही यह शब्द आया है। 'पवित्र शुक्रवार' good Friday को ईसा मसीह को जो यातनाएँ दी गई थी उसका वर्णन भी अपने आपमें एक मिसाल है। देखें -

''जुदेवांनी कांटे हाडूनू,
तांतले बहात्तर वेंचुनू,
तांचो मुकूट घडूनूं,
जुदेवांचो राजा म्हणोनूं,
पलैत रावोनूं,
जेजूचेर करा करुनूं..... (तिसरो मिस्तेर)[18]
''..... राजांगणांतलो काडून भाईरी,
दिलो खुरीस खांदारी,
सरभोंती शस्त्रधारी,
नायकां पायकां माजारी.... (चवथो मिस्तेर)

अर्थात– ईसा को पवित्र शुक्रवार के दिन जो यातनाएं दी गई उसमें कांटो का ताज पहनाया जाना उसे राजा कहकर अपमान करना, उसे देखते रहना शामिल है। (तीसरा भाग- मिस्तेर)

- राजांगण से बाहर निकालकर, मसीहा के कंधों पर क्रोस रखा गया, आसपास सैनिक अलग अलग श्रेणी के उन्हें सता रहे थे उन पर पत्थर भी फेंक रहे थे, का चित्रण किया गया है। (चौथा भाग-मिस्तेर)

कहावतें मुहावरें, पहेलियाँ इनको भाषा का भंडार कहा जाता है। अगर इनका उपयोग उचित रुप से न किया जाय तो भाषा कमज़ोर पड़ती जाती है, किसी भी भाषा में इस ख़ज़ाने को जितना उपयोग में लाया जा सके उतना ही वह समृद्ध बनता है। मोंसिन्योर सेवास्तिआंव शेदोल्फु दालगाद का मानना है कि कोंकणी कहावतों को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

1. संस्कृत भाषा से आई हुई कहावतें
2. पुर्तगाली भाषा से संपर्क होने के बाद बनी कहावतें।
3. कोंकणी की अपनी कहावतें। कहावतें सकारात्मक नकारात्मक दोनों ही होती हैं। इतना ही नहीं अपने भूगोल के आसपास यह सामाजिक विश्व घूमता रहता है। कुछ कहावतें -

- आशा केल्यार दोशा वता
  आस करने से अपना नाम ख़राब होता है।
- कोंबो कालो, कोंबी काली, तांते धवें कशें ?
  मुर्गा काला, मुर्गी काली अंडा सफेद कैसे ?
- पणसाग आंबे जायना.
  पणस (कटहल) को आम नहीं लगते।
- देखल्यार चोर, नाजाल्यार साव.
  पकड़ा जाय वह चोर नहीं तो साहूकार।
- वानांत तकली घालतच मुसलांचे कसले में ?
  ओखली में सिर डाला फिर मूसल से क्या डरना।
- पयले ओब्रीयासांव मागिर देवसांव
  पहले कर्तव्य फिर भगवान। ओब्रीयासंव पुर्तगाली भाषा का शब्द है।
- घर बांधूंक आनी देमांद करुंक बुद्ध दिंवची न्हय.
  घर बांधने और कोर्ट केस (देमांद पुर्तगाली शब्द) करने की सलाह किसी को नहीं देनी चाहिए।
- दोतिक भुलून काज़ार ज़ालो, बायलेचो चाकर जालो.
  दहेज को देखकर शादी की, बीबी का नौकर बन गया।

पहेलियाँ – लोकसाहित्य का अभिन्न हिस्सा है। इसे कोंकणी में 'उमाणे' कहते हैं। मनोरंजन के साथ साथ इससे बुद्धि की कसरत भी होती है। इसलिए बड़े छोटे सब को पहेलियों में मज़ा आता है।

- तीन पायांचो तिकलो घोड़ो/ताचेर बसला कालो चेड़ो हांसता पूण उलयना,
  तीन पैरों का तिकोनी घोड़ा/उस पर बैठा लड़का काला/ हंस रहा पर बोलता नहीं।

जवाब-रसोई में चूल्हे पर का घड़ा

- इल्लो सो पोर/घर राखूंक थोर
  इतना सा बच्चा / घर संभालने में बड़ा। जवाब-ताला
  गोवा में पति या पत्नी का नाम लेने के लिए भी पहेली का उपयोग किया जाता है-
- पोक्या पणसाक पाक चड/..... गावड्याक राग चड
  पोले कटहल को दूध ज़्यादा/.... गावडे को गुस्सा ज़्यादा।
- नांव घे नांव घे, नांव कित्याक ?

..... चे नांव आसा प्रत्येक श्वासाक
  नाम ले नाम ले, नाम क्यों? .... नाम है एक एक श्वास में।
  मेंग्लोर की कोकणी में भी पहेलियां है। उदाहरण -

- भरती आयल्यार जीव बता/ सुक्ती आयल्यार मरता.
  ज्वार आने से जीव जाता है। भाटे से मरती है।
  जवाब-दिए की बाती
- दांत आसा चाबूंक/चाबना कोण?
  दांत है चबाने को, पर चबाता नहीं कौन
  जवाब कंघी
- धुंवता तो चलना कोण ?
  घूमता है पर चलता नहीं कौन ? जवाब-रास्ता[18]

❑❑❑

कोंकणी विभाग -वरिष्ठ व्याख्याता
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा